



महिलाओं की गाँधी के सत्याग्रह एवं असहयोग आन्दोलनों में सहभागिता

मित्तलबेन एम. वाघेला

एम.ए., बी.एड, एम.फील, पीएच.डी (स्कोलर)

नडियाद

मोहनदास करमन्द गाँधी दक्षिणी अफ्रीकी संघर्ष के पश्चात् १९१५ में भारत लौटे और इसी के साथ भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में एक नवीन युग का सूत्रपात हुआ। गाँधी ने अनुभव किया कि स्वाधीनता आन्दोलन को व्यापक एवं जन-आन्दोलन में परिवर्तित करना है तो इसमें महिलाओं की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है। उनका मानना था कि जब-तक समाज में अद्धांग का सक्रिय प्रतिनिधित्व नहीं होगा यह अपनी पूर्णता प्राप्त न कर सकेगा। इसी परिप्रेक्ष्य में गाँधी द्वारा चलाये गये सत्याग्रह एवं असहयोग आन्दोलनों में महिलाओं की सक्रिय भूमिका को रेखांकित करने का एक प्रयास है।

गाँधी की स्वीकारोक्ति कि यदि स्वाधीनता संघर्ष में पुरुषों के साथ महिलाओं की सहभागिता हो जाय तो कार्य आसान हो जायेगा। गाँधी का नेतृत्व की ऐसी अदम्य-क्षमता थी कि समाज के सभी वर्गों कि स्त्रियाँ, चाहे वे शिक्षिता अथवा अशिक्षिता, चाहे वे धनी हो अथवा गरीब, सभी सार्वजनिक रूप से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष माध्यम से अपना सहयोग करने को तत्पर हो गयी। जैसा कि शेखर बधोपाध्याय ने गाँधीवादी आन्दोलन में महिलाओं की सहभागिता को उद्धृत करते हुए स्पष्ट किया कि, आदर्श भारतीय नारी की धारणा प्रस्तुत करते हुए गाँधी ने स्त्रियों की यौनवृत्ति को नकारकर मातृत्व की बजाय बहनत्व को ध्यान का केन्द्र बनाया। स्त्रियाँ जो स्वार्थहीन बलिदान दे सकती थीं, उनकी शक्ति का अनुभव दक्षिण अफ्रीका में कर लिया था और उसे राष्ट्र की सेवा में लगाने का फैसला किया था। लेकिन स्त्रियों के लिए उनका आह्वान रूपकों से भरी एक भाषा में था, जो स्त्रीत्व सम्बन्धी परम्परागत जीवन मूल्यों के लिए विध्वंसक तो नहीं लगती थी। सीता, दम्यन्ती और द्रौपदी उनकी राय में भारतीय स्त्रियों के लिए आदर्श पात्र थीं। इन स्त्रियों को अपने पतियों की दासियाँ न बताकर अत्यन्त पुण्यात्मायें और अपने परिवार, देश और समाज के लिए सर्वोच्च बलिदान दे सकने में समर्थ कहा गया। विशेषतः महत्वपूर्ण था सीता का उदाहरण, क्योंकि तब अंग्रेजों को आसानी के साथ असुर राज रावण का पर्याय बतलाया जा सकता था। लेकिन मुस्लिम स्त्रियों को सम्बोधित करते हुये गाँधी सावधानी के साथ रामायण के ऐसे हवाले देने से बचते रहते थे और उनसे सिर्फ अपने देश और इस्लाम के लिये बलिदान देने का आग्रह करते थे, उन्होंने उस चीज को स्वीकार किया, जिसे वह स्त्री-पुरुष के बीच "स्वाभाविक श्रम-विभाजन" कहते थे और समझते थे कि घर देखना स्त्रियों का कर्तव्य है। लेकिन वह अपने लिए निर्दिष्ट क्षेत्रों से भी कटाई करके, विदेशी कपड़ों और शराब की दुकानों पर धरने देकर और पुरुषों को शर्म दिलाकर कर्म के लिए तैयार करके राष्ट्र की सेवा कर सकती थीं।

वस्तुतः गाँधी जी का उद्देश्य मात्र भारत को अंग्रेजी शासन से ही मुक्त कर देने तक ही सीमित नहीं था वरन उनका उद्देश्य तो सभी प्रकार की कुरीतियों, कुप्रथाओं के शोषण एवं दमन से समाज को मुक्त करना भी था। गाँधी ने कहा था कि स्वराज तभी आयेगा जब 'अबला' कही जाने वाली स्त्रियाँ 'सबला' बन जायें। गाँधी ने महिलाओं को सुधार की वस्तु के रूप में नहीं देखा, जिसके साथ ज्यादा मानवतावादी व्यवहार किया जाये बल्कि एक जागरूक नागरिक और अपने भाग्य के निर्माता के रूप में, देखा जो स्वयं के साथ राष्ट्र का भी भाग्य बदलेगी।

गाँधी का सत्याग्रह दर्शन सत्य-अहिंसा का दर्शन है। सत्याग्रह शब्द स्वयं में संघर्ष का घटक है जो किसी अन्याय, शोषण आदि के विरुद्ध है। सम्पूर्ण मानव इतिहास में गाँधी को छोड़कर किसी दूसरे ने इसका प्रयोग इतने व्यापक क्षेत्र में कभी नहीं किया। गाँधी का सत्याग्रह सत्य की विजय हेतु किये जाने वाले नैतिक-अहिंसात्मक संघर्ष का नाम है जिसका प्रयोग समाज परिवर्तन की पद्धति के रूप में स्वीकार किया गया है। गाँधी ने स्त्रियों से अपेक्षाकृत अधिक योगदान की अपेक्षा की है। स्वयं गाँधी के शब्दों में, इस महान समस्या के समाधान में मेरा योगदान इस बात में निहित है कि मैंने जीवन के हर क्षेत्रों में चाहे वह व्यक्ति से सम्बन्धित हो या राष्ट्रों से सत्य और अहिंसा को के स्वीकारार्थ प्रस्तुत किया है।

स्पष्ट है कि गाँधी ने सत्य व अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह का जो कार्यक्रम बनाया उसका नेतृत्व स्त्रियों के हाथ में दिया। उनका मानना था कि सत्य एवं अहिंसा जैसे व्रतों के पालन में जिस प्रकार की कष्ट सहने की प्रवृत्ति एवं त्याग की आवश्यकता है, वह स्त्रियों से अधिक और किसी में नहीं है। गाँधी के शब्दों में स्त्री अहिंसा की अवतार है। अहिंसा का तात्पर्य असीम प्रेम है और असीम प्रेम का अर्थ कष्ट सहने की असीम क्षमता है। पुरुष की जननी स्त्री के अतिरिक्त इस क्षमता का अधिक से अधिक परिचय दूसरा कौन देता है? वह इस क्षमता का परिचय तब देती है जब वह शिशु को नौ मास तक अपने पेट में रखकर उसका पोषण करती है और उसमें उसे जो कष्ट होता है उसमें आनन्द का अनुभव करती है। प्रसव वेदना से बड़ी और कोन सी पीडा हो सकती है लेकिन सृजन के आह्लाद में वह उस वेदना को भूल जाती है। शांति के अमृत के लिये तरसते युद्धरत विश्व को शांति की कला सिखाना स्त्री का कार्य है। गाँधी का मानना है कि स्त्रियाँ यदि स्वयं में व्याप्त 'शक्ति' को पहचान ले तथा स्वयं को पुरुष दासता से मुक्त कर ले तो राष्ट्र की ही नहीं वरन् विश्व शांति की स्थापना में तदुपरान्त मानवता की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। गाँधी जी के इसी आह्वान पर सत्याग्रह की लड़ाई में लाखों स्त्रियों ने नेतृत्व की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा देश को स्वाधीन करने में आवश्यक योगदान दिया।

मद्य-निषेध जैसे समाज-सेवा के सभी कार्य गाँधी स्त्रियों को देना चाहते थे क्योंकि उनका मानना था कि किसी नियम-कानून के निर्माण में ऐसी सामाजिक बुराईयों को दूर नहीं किया जा सकता बल्कि इसके लिए तो लोगों के हृदय में प्रवेश करके उनकी मनः स्थिति को परिवर्तित करने की आवश्यकता है, जिसमें अदम्य सहनशीलता एवं सहजता की आवश्यकता है और ऐसे कार्यों को करने में स्त्रियाँ ज्यादा उपयुक्त एवं निपुण हैं। गाँधी के शब्दों में मैं चाहता हूँ कि बहनें शराब पीने वालों के घरों में जाये और उनसे शराब छोड़ने की प्रार्थना करें। आपके सम्पर्क में आते ही वे होश में आ जायेंगे, अपना कदम पीछे हटायेंगे और यह देखकर कि आपकी आँखों में प्रेमामृत भर रहा है, उन्हें ऐसा लगेगा कि यह तो सती या योगिनी ही हमारे पास आयी है, और वे लज्जित होकर शराब का त्याग कर देंगे। जिस समय आप बहनें इन शराब पीने वालों की स्त्रियों, उनके बालकों आदि को जानेगी, उनके यहाँ-वहाँ मारे-मारे फिरने वाले अशिक्षित बालकों से स्नेह करेंगी और देखेंगी कि उनके ऊपर आकाश और धरती के सिवाय कुछ नहीं है, किन्तु फिर भी वे शराब पीते हैं, तब आप इस पवित्र कार्य को करने के लिये प्रेरित हुए बिना न रहेगी।

गाँधी के अनुसार व्यक्ति का कर्तव्य स्वधर्म अथवा स्वभाव के अनुकूल होना चाहिए, तभी व्यक्ति अपने कर्तव्य के प्रति सचेष्ट होगा और उस कार्य को प्राप्त में उसे और साथ ही सम्पूर्ण समाज को आनन्द भी मिलेगा। अतः स्त्रियों को अपने इन्हीं गुणों के अनुरूप समाज के विकास में एवं उसके परिवर्तन में भी अपना योगदान देना चाहिये। अहिंसात्मक सत्याग्रह आन्दोलनों में स्त्रियों के प्रतिनिधित्व की पृष्ठि बार-बार गाँधी के कथनों में मिलती है।

इस अहिंसक युद्ध में स्त्रियाँ पुरुषों से ज्यादा भाग ले सकती हैं, क्योंकि स्त्रियाँ तो त्याग और दया की और इसलिए अहिंसा की मूर्ति हैं। जहाँ पुरुष अहिंसा धर्म को केवल बुद्धि से ही समझते हैं, वहाँ स्त्रियों के लिये वह एक ऐसी वस्तु है, जिसे वह जन्म से ही जानती हैं। पुरुष तो बहुत थोड़ी जिम्मेदारी उठाकर ही अपने को कृत कार्य मान लेता है, किन्तु बहनों को तो पति की बालकों की तथा परिवार के अन्य सभी सदस्यों की सेवा करनी पडती है।

१२ मार्च, १९३० को गाँधी जी के प्रसिद्ध दांडी मार्ग के साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरु हुआ। साबरमती आश्रम से चलते हुए वह नमक बनाकर नमक कानून को तोड़ने के लिये गुजरात के समुद्र तट पर स्थित दांडी गांव ७९ स्वयंसेवकों के साथ पहुंचे, नमक सत्याग्रह आन्दोलन के रूप में यह कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इस कार्यक्रम व आन्दोलन के प्रदर्शन, रेलियों व अन्य कार्यों में महिलायें भी हिस्सा लेना चाहती थीं, किन्तु गाँधी ने उन्हें ऐसा करने से मना किया, क्योंकि उन्हें यह संशय था कि कहीं ब्रिटिश भारतीय पुरुषों को कायर न समझें, जो महिलाओं के पीछे छिपे रहते हैं। फिर भी जहाँ से भी महात्मा गाँधी का काफिला गुजरा जिन सभाओं में गाँधी ने अपनी बात रखी, उनमें महिलायें अधिक संख्या में शामिल हुईं। पुलिस के एक प्रतिवेदन में बताया गया कि जहाँ इस तरह की सभायें हुईं वहाँ बजारों की संख्या में महिलायें थीं। एक उदाहरण के अनुसार भीड में अनुमानतः १० हजार महिलाएँ शामिल थीं।

सेवा, श्रद्धा, त्याग, दया इत्यादि नारी गुणों की बार-बार व्याख्या सत्य एवं अहिंसा के परिप्रेक्ष्य में करके गाँधी ने नारी शक्ति का आह्वान किया, परिणामतः सर्वप्रथम 'नमक सत्याग्रह' में असंख्य महिलाओं के योगदान से सभी परिचित हैं। अतः नमक कानून के उल्लंघन से ब्रिटिशों की अवज्ञा कर भारतीय महिलाओं द्वारा दैनिक जीवन में स्वतन्त्रता की घोषणा करने का एक तरीका होगा। इस कार्य से रसोई पर राष्ट्र से तथा घरेलू क्षेत्र सार्वजनिक और

राजनैतिक क्षेत्र से जुड़ जायेगा ।

भारत की स्त्रियों को देश सेवा का दुर्लभ अवसर मिला है । नमक सत्याग्रह के कारण वे निकल आयी थी और तभी स्पष्ट हो गया था कि वे पुरुषों के बराबर ही देश की सेवा कर सकती है । उसमें ग्रामीण स्त्रियों को वह गौरव मिला जो उन्हें पहले कभी प्राप्त नहीं हुआ था । इसमें हर वर्ग, हर समुदाय की महिला ने अपनी भूमिका निभाई ।

गाँधी वह प्रथम राजनैतिक नेता थे, जिन्होंने स्त्री शक्ति को पहचाना तथा सभी संघर्षों में बार-बार उनसे योगदान की अपील की । रौलेट विधेयक (१९१९) के विरुद्ध गाँधी द्वारा स्त्रियों से किया गया निवेदन उनकी महती भूमिका को रेखांकित करता है ।

गाँधी के नेतृत्व में महिलाओं द्वारा अने सत्याग्रह के उदाहरण मिलते हैं, जब उन्होंने सर्वैधानिक संघर्षों के अथवा अंग्रेजी सरकार के बेबुनियाद तथा धर्म विरोधी नियमों के विरुद्ध सत्याग्रह किया और लक्ष्य प्राप्त किया ।

गाँधी जी ने दक्षिणी सरकार को आश्चस्त करते हुए कहा कि यदि मंत्री महोदय अब भी सर्व निर्णय से उत्पन्न शिकायत की आग्रह पूर्वक उपेक्षा करें तो अब यह जान-बूझकर किया गया कहलायेगा । वे विश्वास करें कि भारतीय स्त्रियाँ जेल जाने का लालायित नहीं हैं और न ही समाज के पुरुष, अपनी स्त्रियों की जेल यात्रा की सम्भावना को शान्तिभाव से देखते हैं । इसलिए यदि भारतीय महिलायें सत्याग्रह करें तो उनके मन में निश्चय ही कोई ऐसी शिकायत होनी चाहिये जो कम से कम उनकी निगाह में बहुत गम्भीर है । हम अपनी इन वीर बहनों को बधाई देते हैं, जिन्होंने सर्ल फैसले के अपमान को स्वीकार करने की अपेक्षा युद्ध करने का साहस किया है ।

समय-समय पर स्त्रियाँ गाँधी जी से मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु प्रश्न किया करती थी कि असहयोग आन्दोलनों में वे क्या मदद कर सकती है? तब गाँधी जी उन्हें कर्तव्यों के बारे में बताते थे । गाँधी के अनुसार, जब तक इस कार्य में (असहयोग में) स्त्रियाँ पूरी तरह से सहयोग नहीं करती, तब तक स्वराज की आशा रखना व्यर्थ है । स्त्रियाँ इस बात को नहीं समझती अथवा स्वीकार नहीं करती कि राष्ट्र की स्वतन्त्रता को बनाये रखना, स्वतन्त्रता छिन गयी हो तो उसे प्राप्त करना उनका धर्म है । यदि स्त्रियाँ यह जानती होती कि इस व्यक्ति अर्थात् जनरल डायर के अत्याचार से मुक्ति प्राप्त करना जनता का सर्वोपरि कर्तव्य है तो वह अपने पतियों एवं पुत्रों को शूरत का पाठ पढ़ाती तथा उन्हें भीरुता का परित्याग करके स्वाभिमान की रक्षा के लिये सन्नद्ध करती । लेकिन आज तो इस देश की स्त्रियाँ राष्ट्र कल्याण की सच्ची बातों से अनभिज्ञ रहती हैं, इससे हमें उनसे कम मदद मिलती है ।

गाँधी जी भारतीय शास्त्रों को उदाहरण देते हुए महिलाओं को जागृत किया, जिसके परिणामस्वरूप तीन विशेष कार्य यथा - नमक सत्याग्रह, मद्य निषेध तथा स्वदेशी वस्त्रों का बहिष्कार मुख्यतया स्त्रियों के हाथ में थमाई । असहयोग आन्दोलन में देश के भिन्न-भिन्न भागों में महिलाओं ने प्रदर्शनों में भाग लिया । खादी व चरखे को अपनाया गया, कतिपय महिलाओं ने विद्यालयों एवं महाविद्यालयों को छोड़ दिया ।

असहयोग आन्दोलन में न केवल हिन्दू महिलायें जुड़ीं, बल्कि मुस्लिम महिलायें धीरे-धीरे जुड़ रही थी । जैसे-जैसे यह आन्दोलन आगे बढ़ रहा था, वैसे-वैसे महिलाओं की सक्रियता बढ़ती जा रही थी । उसमें आत्मविश्वास बढ़ता जा रहा था । यद्यपि असहयोग आन्दोलन की अधिकांश महिलायें अभिजन व मध्यवर्गीय पृष्ठभूमि से थीं । किन्तु यह आन्दोलन स्त्री वर्ग के लिये महत्वपूर्ण था ।

असहयोग आन्दोलन के पश्चात् महिला सम्बन्धी दृष्टिकोणों में परिवर्तन आया । इसी तरह गाँधी 'यंग इंडिया' में बराबर लिख रहे कि भारत में स्वराज की विजय में भारतीय पुरुषों का जितना हिस्सा होगा, महिलाओं का भी उतना ही होना चाहिये । बारदोली सत्याग्रह (१९२८) में महिलाओं की अभूतपूर्व सहभागिता देखने को मिली । साइमन कमीशन के विरोध में तथा १९२९ में पूर्ण स्वराज की घोषणा के साथ ही नारी अवज्ञा आन्दोलन छेड़ने की तैयारी प्रारम्भ हो गयी थी । १९३० में नमक सत्याग्रह आन्दोलन (दांडी मार्च) तक गाँधी के अथक प्रयास से यह आन्दोलन भारत के जन-आन्दोलन का स्वरूप ग्रहण कर लिया, जिसमें शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्र की महिलाओं ने सहभागिता किया ।

महिलाओं की यह सहभागिता भारतीय समाज में परिवर्तन का संकेत थी । क्योंकि अब शिक्षित मध्यवर्गीय महिलायें ही नहीं, आम महिलायें आन्दोलनों में भाग ले रही थीं । राजनीतिक आन्दोलनों के साथ-साथ राजनीति में महिला सहभागिता बढ़ती जा रही थी । १९३० में दांडी में पुरुषों के साथ महिलाओं ने अपनी भूमिका निभाई । १९४२ के आन्दोलन में पुरुष एवं महिलाओं ने कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया । स्वतन्त्रता के करीब आते-आते ग्रामीण महिलाओं एवं शहरी महिलाओं की सहभागिता बढ़ती गयी ।

निष्कर्ष

गाँधी ने तत्कालीन वातावरण के अनुसार राजनीति में तीन स्तरों पर महिलाओं की भूमिका के लिए आवश्यक मंच प्रदान किया वे तीन स्तर हैं : स्वराज प्राप्ति के लिए सत्याग्रह अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलनसें में स्वदेशी अथवा खादी के प्रचार-प्रसार में तथा अन्ततः रामराज की स्थापना में । सम्भवतः इस शान्तिपूर्ण संघर्ष में महिलायें पुरुषों को मीलों पीछे छोड सकती हैं । क्योंकि नारी जाति मूक तथा गम्भीर सहिष्णुता की प्रतीक है, जो सत्याग्रही की सर्वप्रथम पहचान है । अतः स्वराज्य की डोर बहनों के हाथ में है । सम्प्रति २१वीं सदी के वैश्विक दौर में महिलाओं के सशक्तीकरण, सहभागिता, सुरक्षा तथा विकास जैसे प्रश्न आज भी प्रासंगिक है, जिन्हें गाँधी-चिन्तनधारा से जीवनी-शक्ति प्राप्त हो रही है ।

संदर्भ

बन्दोपाध्याय शेखर (२००७) पलासी से विभाजन तक (हिन्दी संस्करण), दिल्ली, ओरियन्ट लॉगमैन
Geraldine, Forbes (1996), 'Women in Modern India.' The New Cambridge History of India. Vol. 42, Cambridge University Press
Kishwar Madhu (1985) 'Gandhi on Women' Economic and Political weekly, 5 Oct., 1985, 20(40).

सम्पूर्ण गाँधी वाङ्मय, नई दिल्ली, प्रकाशक विभाग सूचना और प्रसार मंत्रालय, भारत सरकार